जेहि विधि राखो कृपा मनाऊँ ...

जेहि विधि राखो, कृपा मनाऊँ ।
सुनो मेरे प्राण अधार साँवरे, तुम बिन कासों हिय की सुनाऊँ ।।

अलबेले विहरो हियरा में, तो छवि निरखूँ, और कछु गाऊँ ।
पाऊँ टहल महल की प्यारे,
नित नित नव-नव लाड लडाऊँ ।।1।। जेहि विधि राखो ...

उमगि उमगि मेरे राधा बिहारी, नित्य सुहाने पट पहिराऊँ ।
ऋतु अनुकूल जाति तेरे हिय की,
भाँति भाँति के भोग लगाऊँ ।।2।। जेहि विधि राखो ...

रतन सिंहासन आप बिराजो, करूँ आरती बलि-बलि जाऊँ ।
गाऊँ गुणगन दीन ह्रदय से,
तेरे परिकर के मन भाऊँ ।।3।। जेहि विधि राखो ...

येहि विधि बीते जीवन स्वामिनी, बाधा रहित भजन करि पाऊँ ।
अंत समय में द्वार पे तेरे,
प्राण फूल देहरी पे चढ़ाऊँ ।।4।। जेहि विधि राखो ...

http://www.govindbhargav.in